BIYANI
Where you can trust

BIYANI
GROUP OF COLLEGES

सच्चे प्रेम को जानें

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

- Free Study Notes • Video Lectures
- Career Planning • Scholarship • Blogs
- Top Books • Model/Previous Question Papers...

Prof. Sanjay Biyani
Director (Acad.)
Biyani Group of Colleges
Find us on www.facebook.com/biyanigroupofcollege

ISBN No. 978-93-83462-31-5

सम्पादकीय

प्रिय पाठक,

प्रेम कभी व्यक्ति से नहीं होता है। प्यार कभी शरीर से नहीं होता, यह तो आत्माओं का विषय है और आत्मा की तरह ही प्रेम कभी नहीं मरता, जो मरता है वो निःसंदेह प्रेम नहीं, अपितु प्रेम का भ्रम है।

सच्चे प्रेम को जानें (Know True Love) एक बहुत ही गहन निर्माण पुस्तिका (Construction Manual) है। यह पुस्तिका एक खुशहाल और परिपूर्ण जिंदगी का एक नक्शा तैयार करती है। आपके जीवन का चाहे कोई भी लक्ष्य हो, कोई समस्या हो, रिश्ते हो सभी का केन्द्र सिर्फ प्रेम है... निर्मल और निश्चल प्रेम! निश्चल प्रेम ही जीवन का सार है।

यह पुस्तिका प्रेम के 36 नियमों में प्रेषित एक ऐसी यात्रा है जो हमें आस्था और प्रेम के अद्भुत संसार में ले जाती हैं। इस पुस्तिका के माध्यम से मेरा यह प्रयास है कि आपके सामने सच्चे प्रेम के इस रहस्य को मैं अपने स्वयं के अनुभव से व्यक्त कर सकूं।

सच्चा प्रेम ही वह मुख्य कुँजी है जो सभी खुशियों के द्वार खोलती है। आशा है आप इस पुस्तिका के द्वारा प्रेम के असल मायनों को समझ कर अपने जीवन में आत्मसात् करेंगे।

इस पुस्तिका के संदर्भ में आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

सस्नेह!

SBiyani

डॉ. संजय बियानी
निदेशक
www.sanjaybiyani.com

सच्चे प्रेम को जानें

क्या आप अच्छे स्वास्थ्य (Health) बेहतरीन रिश्ते (Relation), प्रचूर धन (Money, शानदार कॅरियर (Career), बेहतरीन जॉब (Job), या फिर बड़े व्यवसाय (Business) को पाना चाहते हैं? क्या आप गुस्से (Anger), जलन (Jealous), लोभ (Greed), काम (Work), मोह (Attachment) को दूर कर अपने मन को शांत कर हर समय खुश रहने की इच्छा रखते हैं? क्या आपको लगता है कि आप जरूरत से ज्यादा सोचने (Overthinking) की समस्या से घिरे हैं? क्या आप यह जानना चाहते हैं कि क्या कोई एक ऐसा रहस्य हो सकता है जिसे जानकर सब कुछ जाना जा सके? तो मैं आपको इस रहस्य को बताना चाहूंगा, बस यह रहस्य है प्रेम..... प्रेम और बस निर्मल प्रेम। समस्या यह है कि इस रहस्यमयी शब्द को हमारे परिवार, समाज व शिक्षण संस्थानों में भी ठीक से नहीं बताया जाता। इस परम् रहस्य को ठीक से जाने बिना हमारा समाज कभी स्वस्थ नहीं रह सकता। आज मैं आपके सामने सच्चे प्रेम के इस रहस्य को अपने खुद के अनुभव से बतलाने की कोशिश करता हूं। हो सकता है उनमें से कुछ बिन्दुओं को आपने सुन रखें होंगे या बहुत से बिन्दु ऐसे भी हो सकते हैं जिन्हें आपने नहीं सुना होगा। अगर कुछ बिन्दुओं को आपने सुन भी रखा हो पर अमल में लाना रह गया हो तो भी यह लेख आपको पुनः स्मरण करवाएगा और आपके जीवन में इन बातों को उतारने के लिए प्रेरित करेगा। मुझे विश्वास है यह लेख आपके जीवन को बहुत शानदार सकारात्मक बदलाव लाने में मददगार साबित होगा।

1. **प्रेम मोह (Attachment) नहीं है, प्रेम निर्मोही है।**

सच्चे प्रेम में कभी मोह होता ही नहीं। मोह यानी ममता, यानी स्वयं द्वारा दूसरों को बांध लेना। मोह यानी खुद को ही फन्दे में बांध लेना। खुद के द्वारा खुद को ही गुलाम बना लेना। मोहग्रस्त व्यक्ति मकड़ी की तरह स्वयं अपने चारों तरफ जाल बना लेता है और उस जाल में फँस जाता है। दूसरी ओर प्रेम तो मुक्ति लाता है। सच्चा प्रेम, प्रेम में पक्के दो व्यक्तियों को परम आनन्द (Unlimited Happiness), मुक्ति (Liberation) देता है, जो फिर कभी खत्म ही नहीं होता।

2. **जो भाव बाहर से संचालित हो रहा है– वो आग्रह और मोह है, जो भाव भीतर से प्रवाहित हो रहा है, वो प्रेम ही शुद्ध प्रेम है।**

आपने गीली लकड़ी को जलते हुए देखा होगा, उसमें धुआं निकलता है। धुआं निकलने का कारण लकड़ियों में विजातीयता यानी पानी का

होना है। मोह प्रेम के भीतर विजातीयता यानी पानी का होना है। अगर लकड़ी सूखी हो और जले तो उसमें धुआं नहीं उठता। इसी भांति अगर सच्चा प्रेम हो तो उसमें बिल्कुल भी मोह नहीं होता। हमें हमारे प्रेम के मार्ग में मोहरूपी अशुद्धता या विजातीयता को शुद्ध करते चलना होगा।

3. **लोभ (Greed) अतीत में रहना है और कामनाएं (Expectation) भविष्य में रहना है और प्रेम (Love) वर्तमान में रहना है।**

व्यक्ति वर्तमान में चीजों को जोर से पकड़े रहता है, इसे लोभ (Greed) कहा जाता है, भविष्य कुछ इच्छाएं रखता है, उसे कामनाएं या अपेक्षाएं कहा जाता है। ये दोनों ही अवास्तविक (unreal) है। प्रेम मे तो व्यक्ति वर्तमान में रहने लगता है, जो कि वास्तविक है।

4. **प्रेम जिससे करोगे, तुम बस वैसे ही बनने लगोगे।**

कुछ लोग मशीनों से प्रेम करते है, वे मशीन जैसे हो जाते हैं। कुछ लोग अपने मोबाइल, कम्प्यूटर और कार से प्रेम करने लगते हैं, वे उन जैसे ही बनने लगते हैं यानी जड़ (Materialistic) की भांति हो जाते हैं और उसी तरह के स्वप्न भी आने लगते हैं।

आज लोग बिना प्रेम के सामने पत्थर की मूर्ति को पूजते रहते हैं, वे पथरीले से हो रहे होते हैं। आप ये जान लीजिए कि प्रेम तो परम चैतन्यता (Awareness) का नाम है।

5. **प्रेम कामनाओं या चाहतों की पूर्ति नहीं, बल्कि समर्पित होना है।**

प्रेम में किसी भी प्रकार की कामनाएं, इच्छाएं, मांग, अपेक्षाएं दूसरों से नहीं होती हैं। सामान्यतः हम सामाजिक जीवन में देख रहे होते हैं, एक पत्नी अपने पति से प्रेम चाह रही होती है या मांग रही होती है और दूसरी ओर पति भी अपनी पत्नी से प्रेम चाह रहा होता है या मांग रहा होता है। दोनों कुछ ऐसे मांग रहे होते है, जैसे- कोई दो भिखारी एक-दूसरे से भीख मांगें। दोनों को प्रेम मिल ही नहीं सकता, क्योंकि प्रेम तो देने का नाम है, मांगना तो भिखारीपन है। प्रेम वास्तव में दूसरे के प्रति निःस्वार्थ समर्पित होने का नाम है। जो व्यक्ति प्रेम मांगते है, उनके जीवन में कभी प्रेम के बीज अंकुरित ही नहीं हो पाते हैं।

6. **प्रेम कारण नहीं है, प्रेम अकारण होता है।**

अगर प्रेम सच्चा है, तो बिना कारण से होगा। जहां कारण होता है, वहां प्रेम कहां? प्रेम तो पेड़ से, पौधो से, चीटीं से, चिड़ियां से, गाय से, कुत्तों से और इस जगत के हर जीव से बिना प्रायोजन के ही होता है, क्योंकि बस आप स्वयं प्रेम से भरे होते है।

मैं किसी के जीवन से अकारण राजी हूँ। अगर कारण है तो फिर कैसा प्रेम, अगर प्रेम के पीछे कोई कारण है, तो उसे व्यापार या लेन-देन कहना ठीक रहेगा।

इस तरह हम कह सकते हैं कि अगर कारण है, तो ये मोह है और अगर अकारण है तो प्रेम हो सकता है, जैसे माँ का अपने शिशु से प्रेम अकारण ही होता है।

7. **प्रेम में खुद को कुछ बनाना नहीं, बल्कि खुद को मिटाना होता है।**

जब हमारे भीतर के अहंकार (Ego) शून्यता की अवस्था आ जाती है, तो वो भी खालीपन भीतर उत्पन्न हो जाता है, उसमें किसी को भी समाया जा सकता है। हमारा ''मैं'' भाव ही हमारे सुख-दुख व जीवन में आ रही बाधाओं का मुख्य कारण है। जब हम निःस्वार्थ भाव से भरे होते हैं तो भीतर से प्रेम तत्त्व से भर जाते हैं। खुद को मिटाने से आशय अपने भीतर के मोह (Attachment) व अहंकार (Ego) को मिटाने से है।

8. **अगर आप दो महिलाओं/दो पुरूषों के प्रेम में पड़े हैं, तो ये प्रेम नही है। हाँ अगर आप सभी महिलाओं/सभी पुरूषों के प्रेम में पड़े है, तो ये प्रेम हो सकता है।**

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हर व्यक्ति स्वयं से ही सर्वाधिक प्रेम करता है और इसी कारण अपने को तृप्त करने के लिए बाहरी मोह जनित रिश्तों व

वासनाओं में फंस जाता है। प्रेम शब्द तो परम पवित्र है, परम व्यापक है, वो फिर सीमित कैसे रह सकता है। प्रेम से भरा व्यक्ति तो एक व दो से नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जगत के सभी पुरूषों को ही निःस्वार्थ प्रेम लुटाने लगता है। उसे तो किसी में भी दूसरा दिखता ही नहीं। उसका अपने भीतर सबके प्रति आदर व सम्मान उठने लगता है।

9. **प्रेम अंधेरा नहीं, ये तो स्वर्ग की रोशनी-सी झलक है।**

वास्तव में प्रेम ही ज्ञान है और ज्ञान ही प्रकाश है। जो प्रेम को जान लेता है, वो ही ज्ञानी है, या यूं कहें जो ज्ञान पा लेता है वो ही प्रेमी भी हो जाता है। प्रेम स्वर्ग की रोशनी सी झलक है। इसीलिए कबीरदास जी कहते हैं- ''पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय''।

10. **प्रेम अगर हो तो आप सामने वाले से वो करवाते हैं, जो वो करना चाहते हैं, ना कि आप उनसे वो करवाते हैं जो आप चाहते हो।**

प्रेम की सीढ़ी से हम उतरने लगते हैं, जब हम दूसरों पर अपना अधिकार जमाने लगते हैं और उनसे वो करवाने की कोशिश करने लगते हैं, जो हम चाहते हैं। इसके विपरीत प्रेम की सीढ़ी से हम ऊपर चढ़ने लगते हैं, जब हम दूसरों को मुक्त (free) करते चलते हैं, उन्हें वो करने देते हैं जो वो करना चाहते हैं।

11. **प्रेम दान है, भिक्षा नहीं।**

सच्चा प्रेमी, सम्राट की भांति देने की आदत रखता है और प्रेम से रहित व्यक्ति भयभीत रहता है और भिखारी की तरह दूसरों से मांगता रहता है। प्रेम तो बस निःस्वार्थ व कृतज्ञता की भावना के साथ सर्वस्व देने का भाव है। किसी से कोई चाहत या मांगना प्रेम कैसे हो सकता है?

12. **प्रेम अपेक्षा (Expectation) नहीं, बल्कि ये तो बेशर्त देना है।**

अपेक्षा के कारण ध्यान सदैव दूसरों पर लगा होता है, अगर ध्यान दूसरों से हटे तो ही भीतर नजर पहुँच सकेगी। प्रेम को देने के भाव के रूप में भी व्यक्त किया जाता है। मैं यह कहना चाहूँगा कि ये सिर्फ देने का भाव ही नहीं, बल्कि बिना किसी शर्त के सर्वस्व लुटा देने का भाव है।

13. **प्रत्येक व्यक्ति के पास ये विकल्प रहता है कि प्रेम की सीढ़ी से नीचे की ओर उतर सकता है (Falling in Love) या फिर प्रेम की सीढ़ी से ऊपर की ओर चढ़ (Rising in Love) भी सकता है।**

अक्सर लोग कामनाओं व वासनाओं की पूर्ति करने को प्रेम का होना समझ लेते हैं, ये तो प्रेम की सीढ़ी से नीचे उतरना है। अगर वास्तव में प्रेम की अच्छाइयों को पाना हो तो श्रीकृष्ण तथा निष्काम कर्म व अनासक्त भाव को जीवन में लाना होगा। ऐसा करने से ही हम प्रेम के सर्वोच्च शिखर पर भक्ति को जान सकेंगें।

14. **प्रेम कभी हारता ही नहीं है। अगर हार गये हो, तो समझो ये प्रेम ही नहीं, ये तो अहंकार है।**

भीतर प्रेम है, बाहर प्रभु है और अगर भीतर अहंकार है तो बाहर शत्रुता मिलेगी ही। प्रेम की राह में अगर कोई अस्वीकार्यता भी मिले तो आप घबराना नहीं। थोड़ी ही देर में उसे स्थायी स्वीकार्यता मिलेगी। जब आपको इस कथन पर पूर्ण विश्वास व श्रद्धा होगी, तभी ऐसा हो सकेगा। प्रेम भी परीक्षा मांगता है एवं अशुद्धता को जांचना चाहता है।

15. **प्रेम को कमल से समझना ठीक है।**

कमल को 'पंकज' भी कहा जाता है। पंकज शब्द दो शब्दों के जोड़ से बना है। पंक+ज = पंकज। 'पंक' का अर्थ कीचड़ है तथा 'ज' का अर्थ जन्म से है। दूसरा आशय हुआ जिसका जन्म कीचड़ में होता है। इसी भांति अगर हम प्रेम में सिर्फ वासनाओं व कामनाओं को देख रहे है, तो समझो सिर्फ कीचड़ पर नजर लगी है, परन्तु अगर प्रेम में ध्यान व प्रार्थना पर नजर लगी है तो समझो उस कीचड़ में उगे कमल को देख रहे होंगे।

16. **वास्तव में प्रेम से भरा व्यक्ति दुःखी हो तो नहीं सकता। प्रेम के मार्ग में अगर दुःख है, तो समझना, इस प्रेम में मालकियत (Ownership) या अहंकार (Ego) घुसा होगा।**

दुःख का कारण बाहर है और प्रेम का होना भीतर से होना है। जो व्यक्ति बाहरी दुनिया में कामनाओं व अपेक्षाओं से भरा है, वो तो निश्चित ही दुःखी हो ही जाएगा। वह व्यक्ति तो अहंकार व मालकियत से भरा होगा। जो व्यक्ति बार-बार दुःखी हो रहा, तो समझो, वो वाकई ही सच्चे प्रेम से वंचित है।

17. **प्रेम जन्म से स्वतः नहीं मिलता, बल्कि प्रेम को तो अर्जित करना होता है।**

बच्चा जन्म के बाद समाज में प्रतिस्पर्द्धा व भौतिक साधनों को देखता है और सामाजिक परिवेश के कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसी विकृति में फंस जाता है। अगर एक समय बाद वो इन विकृतियों को भली-भांति समझ लें, तभी वो सच्चे प्रेम को पा सकेगा, अन्यथा वो सारा जीवन कामनाओं व वासनाओं में ही भटकता रह जाता है। प्रेम को उसे लगातार विकारों को दूर कर उसे शुद्ध करना होता है।

18. **ध्यान (Meditation) व प्रार्थना (Prayer) प्रेम को अर्जित करने के श्रेष्ठ उपाय है।**

प्रेम भावनाओं की मिठास है। जब तक हम खुद को शरीर और विचार ही समझते रहते है, तब तक प्रेम को कैसे समझ पाएंगें। प्रेम तो शरीर व विचारों से भी आगे रही मधुर भावनाओं का नाम है, जिसे स्वयं को जानने से ही (Introspection) पाया जा सकता है। जब तक हम खुद को ही नहीं जान पाएंगें, तब तक दूसरों को कैसे शान पाएंगें। ध्यान व प्रार्थना के द्वारा हम शरीर विचार से परे स्वयं को शानकर, प्रेम को पा सकते है। जिसके जीवन में ध्यान व प्रार्थना ही नही तो वह स्वयं प्रेम को कभी पा भी नही सकेगा। जो व्यक्ति सच में सच्चे प्रेम को पा लेना चाहता है, उसे ध्यान व प्रार्थना के महत्व व उसे पाने के तरीके को समझना होगा। आज हमारी प्रार्थनाएं भी भय व प्रलोभन के कारण होती है, क्या सच में ऐसी प्रार्थनाओं से भला प्रेम को पाया जा सकेगा? वास्तव में जो प्रार्थना कुछ पाने के लिए है, वो प्रार्थना ही नहीं है।

19. **शून्य भाव से प्रेम का जन्म होता है।**

जहां अहंकार भाव से हम स्वयं को अलग समझने लगते है, वही निर अहंकार भाव से शून्य भाव का हमारे भीतर जमा होता है। इसी शून्य भाव में दूसरे भी समाने लगते है। इसी को सच्चा प्रेम होना कहते है।

20. **जो बांटने से घटता हो, उसे भूलकर भी प्रेम ना समझे, प्रेम तो बांटने से बढ़ता जाता है।**

जो व्यक्ति आपके प्रेम को स्वीकार करें, उसके प्रति आप कृतज्ञता से भर जाए, क्योंकि वो अस्वीकार कर सकता था और आपके जीवन में प्रेम के विकास को कुछ कम भी कर सकता था। प्रेम जितना बांटा जाता है, वो तो उतना ही बढ़ता जाता है, अगर तुम्हें लगे कि इसे बांटने से ये कम हो जाएगा तो, ये फिर प्रेम हो ही नहीं सकता। हाँ ये स्वार्थ या मोह हो सकता है।

21. **प्रेम कोई सम्बन्ध नहीं, कामना नहीं, कृत्य नहीं, बल्कि प्रेम तो चैतन्य दशा (Conscious state of mind) है। प्रेम किया नहीं जाता प्रेम तो दिया जाता है।**

प्रेम कामना और कृत्य भी नहीं है, जिसे आप बाहरी दुनिया में खुद करते है। प्रेम तो कुछ ऐसा है, जो आप स्वयं बन सकते है। प्रेम तो चैतन्यता (Consciousness) की ऐसी दशा है, जिसे आप अपने भीतर भावनाओं की मिठास के रूप में महसूस कर सकते है। जिसके जीवन से बैर या द्वेष चला गया हो, वो कहता है, ''मैं प्रेम हूँ।'' तुम मुझे चाहो या ना चाहो, तुम मुझे आदर दो या ना दो, मैं तो तब भी प्रेम ही दूँगा, क्योंकि तुम्हारा कृत्य अब महत्वपूर्ण नहीं है।

22. आप प्रेम का झरना बने। आप खुशी व आनन्द की अभिव्यक्ति बने।

जब आप कुछ ऐसे बन जाते है, जैसे कि एक बीज यात्रा कर जैसे पुनः फूल बन गया हो तो, बस वो सुगन्ध व सौन्दर्य की अभिव्यक्ति बन जाता है। वो सबको खुशबू देता है, बिना भेदभाव के। प्रेम से भरा व्यक्ति भी इस फूल की भांति और झरने के समान बन जाता है, जिसके पास आकर हर किसी को उसके भीतर के आनन्द का अहसास होने लगता है।

23. प्रेम का चरम भक्ति है। प्रेम को निरंतर शुद्ध करते रहना चाहिए। प्रेम परमात्मा को पाने का रास्ता है।

प्रेम को जैसे-जैसे हम काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार जैसी विकृतियों से मुक्त करते जाते हैं वैसे-वैसे हम प्रेम के शुद्धतम रूप भक्ति को अपने जीवन में पाते जाते हैं। हम परम आत्मा यानी परमात्मा के करीब होते जाते हैं। प्रेम परमात्मा को पाने का रास्ता है।

24. प्रेम का फूल बहुत से कांटों के बीच खिलता है।

तुम प्रेम में सिर्फ सुख ही मत खोजना। प्रेम में सुख व दुख दोनों ही हैं, ऐसे ही जैसे गुलाब के पौधे में फूल ही नहीं, कांटे भी होते हैं। वैसे भी सुख व दुख बाहरी दुनिया के प्रभाव के कारण हैं, जबकि प्रेम तो भीतर उत्पन्न हो रही मधुर भावनाओं का परिणाम है।

25. प्रेम को भोगी नहीं जानते और ना ही योगी जानते हैं।

भोगी के जीवन में सांसारिक लक्ष्य यानी मोटर-गाड़ी, सोना-चाँदी, जमीन-जायदाद, पद व प्रतिष्ठा होती है और दूसरी ओर योगी भी मोक्ष की इच्छाओं को लेकर चलते हैं। हम जानते हैं कि जहां कोई इच्छा रह जाए, वहां फिर भला सच्चा प्रेम कहां होता है? प्रेम निःस्वार्थ भावना से किया जाता है।

26. प्रेम ''दो नहीं, एक'' होना है।

सच्चा प्रेम ''एक'' को देखने की कला है। जब हम स्वयं को भीतर जाकर देखते हैं तो पता चलता है, मैं और तू अलग-अलग है ही नहीं। सब आपस में जुड़े है। बड़े सूक्ष्म स्तर पर हम सभी चैतन्यता (Awareness) की शक्ति द्वारा आपस में जुड़े है। कुछ ऐसे, जैसे एक तार में बहती ऊर्जा सैंकड़ों बल्बों को प्रकाशमान कर देती है। सूक्ष्म स्तर पर सब बल्ब जुड़े होते हैं। अगर हर समय हमारे जीवन में तेरा और मेरा जैसा भाव सतत् बना रहता है, तो समझो हम सच्चे प्रेम से दूर हैं।

27. सच्चा प्रेम ना तो शरीर से सम्बन्धित है और ना ही उस शरीर से उत्पन्न हो रहे रसायन (Hormones) से सम्बन्धित है।

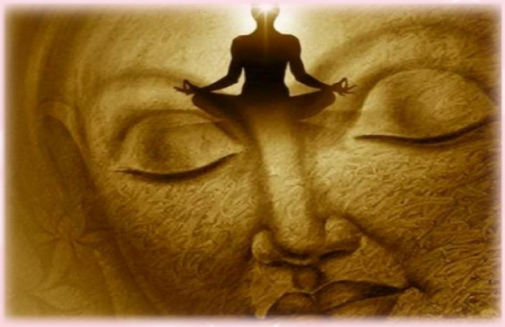

अगर सच्चा प्रेम (Devine Love) मात्र शरीर पर ही आधारित होगा, तो जल्दी ही उदासी (Boredom) लेकर आएगा, जबकि सच्चा प्रेम तो उदासी कैसे ला सकता है? वो तो सदा चैतन्यता (Awareness) लाता है। लैला व मजनू के शरीर में ज्यादा हार्मोन्स रहे होंगें। अगर वैज्ञानिक तरीको से अगर इन हार्मोन्स को कम या खत्म कर दें तो क्या वे क्या सच में एक दूसरे के प्रति इतने आकर्षित रह पाएंगें?

28. प्रेम आत्मा (Soul) में छुपी परमात्मा की ऊर्जा (Energy) है।

वास्तव में प्रेम तो आत्मा का भोजन है। हमारे शरीर (Body) और इस सारे अस्तित्व (Existence) को हमारी श्वास जोड़ती है। इसी भांति और अधिक सूक्ष्म तल पर आत्मा (Soul) और परमात्मा (God) को प्रेम जोड़ता है। जहां प्रेम नहीं, वहां कभी परमात्मा हो ही नहीं सकता, क्योंकि प्रेम आत्मा में छुपी हुई परमात्मा की ऊर्जा है, जो कामनाओं के कारण प्रकट ही नहीं हो पाती। इसी कारण कृष्ण अनासक्त भाव व निष्काम कर्म को भगवद् गीता में परमात्मा को पाने का सुगम मार्ग बतलाते हैं।

29. प्रेम दूसरों की आंखों में अपने को देखना है, जैसे कोई कह रहा हो, तुम पर मैं सब कुछ न्यौछावर कर दूं। तुम किसी की आंख में अगर ऐसी गरिमा को देखो तो समझो जीवन सफल हुआ। ऐसे सच्चे प्रेम से तुम्हें अपने जीवन के अमूल्य होने का अहसास होगा। प्रेम के बिना तुम बार-बार स्वयं को अभागा ही महसूस करोगे।

30. क्या प्रेम घृणा (Hate) बन सकता है?

साधारण व्यक्ति के प्रेम में कहीं मालकियत छुपी होती है। वो कहीं ना कहीं राजनीति कर रहे होते हैं। जो घृणा में बदल गया है, वो कभी प्रेम था ही नहीं। वास्तव में साधारण व्यक्ति के प्रेम में मोहरूपी कीचड़ छुपा होता है। कामनाओं व इच्छाओं के कारण जीवन में तनाव भी उत्पन्न होने लगता है जबकि प्रेम हमारे जीवन को प्रसन्नता से भर देता है।

31. आकर्षण प्रेम नहीं है।

एक-दूसरे की ओर आकर्षित होना एक रासायनिक प्रकिया है। आकर्षण में दूसरे की आवाज, शरीर, महक तथा उसके हाव भाव अच्छे लगने लगते हैं और मन में यह भावना उठने लगती है कि वहीं व्यक्ति उसके लिए सबकुछ है। आकर्षक के कारण उत्पन्न भावना प्रेम कैसे हो सकती है? वास्तव में प्रेम का मुख्य लक्षण तो समर्पण व निस्वार्थ देने का भाव है। आज युवा आकर्षण को प्रेम समझने की गलती कर बैठते है।

32. सच्चे प्रेम के पीछे ज्ञान आएगा और फिर सच्चा प्रेम हो तो वो प्रार्थना बनेगा।

विज्ञान का अर्थ है संसार यानि बाहर के वातावरण, वस्तु या व्यक्ति को समझना जबकि ज्ञान का अर्थ है स्वयं को भीतर से जानना। अपने विचारों, भावनाओं व अस्तित्व को समझना। प्रेम के बिना भला कोई व्यक्ति स्वयं को कैसे जान पाएगा क्योंकि इसकी सभी शक्ति तो बाहर स्थित संसार में ही कुछ खोज रही होती है। जब बाहर कुछ पाना ही नहीं है तो सारी ऊर्जा ज्ञान की तलाश में लग जाती है। प्रेम भरे दिल में ज्ञान प्रगट होने लगता है। प्रेम व ज्ञान के कारण ही ईश्वर को जाानना सम्भव हो पाता है। वास्तव में प्रेम एक विशिष्ठ अनुभव है जिसे विचारों द्वारा व्यक्त किया जाना संभव ही नहीं है। प्रेम ज्ञान के कारण शुद्ध व जब पूर्ण पवित्र हो जाता है तो श्रद्धा उत्पन्न होने लगती है और ऐसा व्यक्ति स्वतः ही प्रार्थना से जुड़ जाता है और ईश्वर की आलौकिक शक्ति को महसूस करने लगता है। आज प्रार्थना के दौरान भी लोग ईश्वर से कुछ मांग रहे होते हैं। सच तो यह है कि प्रार्थना मांगना नहीं बल्कि धन्यवाद देने का भाव है।

33. लेना देना क्या प्रेम है?

लेने की भावना स्वार्थ है। लेना व देना व्यापार कहा जा सकता है। प्रेम का अर्थ तो बस देना-देना ही है।

34. प्रेम आत्मा का भोजन है।

जैसे शरीर की आवश्यकता पानी व भोजन हैं। जैसे मन का भोजन विचार है। इसी तरह हमारी आत्मा का भोजन प्रेम है। प्रेम के बिना आत्मअनुभूति हो ही नहीं सकती। बिना प्रेम की ऊर्जा के स्वयं की खोज हो ही नहीं सकती।

35. संसार में वो कौनसा कृत्य हो सकता है जिसके कारण व्यक्ति में प्रेम का बीज अंकुरित होने लगता है?

अगर हम 24 घंटे के दिन में एक या दो काम भी ऐसे करने लगते हैं जिसके बदले में हमें कुछ पाना नहीं होता या यूं कहे कि कोई स्वार्थ नहीं होता तो बस ऐसा होने मात्र से आपके भीतर प्रेम के बीज अंकुरित होने लगते हैं। आप पेड़ को पानी पिला सकते हैं, किसी चिड़िया को दाना दे सकते हैं या किसी भिखारी की मदद भी कर सकते हैं।

36. प्रेम कभी हारता ही नहीं वह तो परमात्मा को पा कर ही रूकता है।

प्रेम का उर्ध्वगमन भक्ति है। प्रेम की असंगति वासना है, प्रेम कभी हारता ही नहीं। प्रेम बीज है, परमात्मा का प्रेम हार जानता ही नहीं। प्रेम तो जीत ही जानता है। जीतते-जीतते उसी रूप पूर्णता को पा पाता है जिसके फलस्वरूप परमात्मा यानी परमानन्द मिल जाता है।

★ ★ ★

BIYANI
GROUP OF COLLEGES

BIYANI
Where you can trust

Follow us

Accredited 'A' Grade by NAAC

VISION : YOUTH EMPOWERMENT | MISSION : PROFESSIONAL EDUCATION

- **Biyani Girls College**
  (NAAC Accredited) www.biyanicolleges.org
- **Biyani Inst. of Science & Management for Girls**
  (NAAC Accredited) www.bisma.in
- **Biyani Girls B.Ed. College**
  (NAAC Accredited) www.biyanigirlscollege.com
- **Biyani School of Nursing & Paramedical Science for Girls**
  www.biyaninursingcollege.com
- **Biyani Ayurvedic Medical College & Hospital for Girls**
  www.biyaniayurvediccollege.com
- **Biyani College of Science & Mgmt. (Co-Ed.)**
  www.bcsmjaipur.com/edu
- **Biyani Law College (Co-Ed.)**
  www.biyanilawcollege.com
- **Biyani Inst. of Pharmaceutical Sciences (Co-Ed.)**
  www.biyanipharmacycollege.com
- **Jaipur Inst. of Pharmaceutical Sciences (Co-Ed.)**
  www.biyanicolleges.org
- **Biyani Institute of Architecture & Design**
  www.biyanicolleges.org
- **Biyani Private ITI (Co-Ed.)**
  www.biyaniiti.com
- **Biyani Institute of Physical Education (Co-Ed.)**
  www.bcsmjaipur.com
- **Biyani Inst. of Skill Development (Co-Ed.)**
  www.bisd.in
- **Biyani Inst. of Yoga & Naturopathy (Co-Ed.)**
  www.biyanicolleges.org

GURUKPO No.1 Educational Web Portal in India .COM — www.gurukpo.com

BIYANI tv बात में दम है... — www.youtube.com/BiyaniTv

बियानी टाइम्स BIYANI TIMES JAIPUR ...जो देता है पॉजिटीविटी, एनर्जी एंड अपडेट — www.biyanitimes.com

Radio Selfie 90.8 FM — www.radioselfie.in

BioSeeds Chaos to Order, Random to Functional — www.bioseeds.jp

Campus 1 : Sector-3, Vidhyadhar Nagar, Jaipur-302039, Rajasthan, India
Campus 2 : Kalwar-Jobner Road, Kalwar, Jaipur-303706, Rajasthan, India
Campus 3 : Champapura, Kalwar Road, Jaipur-303706, Rajasthan, India

Phone : 8696218218, 8290636942
E-mail : acad@biyanicolleges.org
Website : www.biyanicolleges.org

For more information visit our website : www.biyanicolleges.org & fill the enquiry/feedback form